केन्द्रीय विद्यालय संगठन,
भोपालसंभाग
मैदा मिल के सामने, भोपाल-462 011
दूरभाषक्रमांक 2550728(D.C.)
2551678 (. स.आ.)
2551699 (प्र.अ./ले.प.एवं ले.अ.)
फैक्सः 0755-2553126
ई-मेल:acbhopal@yahoo.com

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN
BHOPAL REGION
Opp. Maida Mills,Bhopal-462011
Phone: 2550728 (DC)
2551678 (ACs)
2551699 (AO/FO)
Fax: 0755-2553126
E.Mail:acbhopal@yahoo.com

F.DO/2015-16 / केविसं / क्षे.का.भो /

दिनांक 06.11.2015

प्रिय प्राचार्यगण,

सभी मानवीय मामलों में जहॉ प्रयास हैं, वहीं उसके परिणाम होते हैं और प्रयास का समस्त मूल्यांकन उसके परिणाम के आधार पर ही होता है। समस्त बौद्धिक, मानसिक एवं शैक्षिक संपदा प्रयासों का ही फल होता है, इससे ही विचार, उद्देश्य एवं लक्ष्य पूर्णता को प्राप्त करते हैं।

01. कार्यकर्ता ही संसार के रक्षक हैं । अदृश्य शक्तियों से ही दृश्यमान जगत परिलक्षित होता है, इसलिए जो व्यक्ति अपने प्रयासों एवं प्रयोगों से आगे बढ़ते हैं, वे अपने कार्य निष्पादन के दर्शन से ही पोषित होते हैं। मानवता कर्ता को कभी भूल नहीं सकती । वह उनके आदर्शो को धूमिल अथवा नष्ट नहीं होने देती है , अपितु उनमें ही जीवंत रहती है। वह उन्हें उस यथार्थ के रूप में देखती है, जिन्हें एक दिन देखा और समझा जायेगा। जो व्यक्ति अपने लक्ष्य को हदय में धारण करते हैं वह इस तथ्य को एक दिन अवश्य महसूस करेगें ।

02. शिक्षक और प्राचार्य शाश्वत विश्व के निर्माता हैं। उनके जीवंत होने पर ही संसार का सौदर्य विद्यमान हैं अन्यथा परिश्रम से थकी मानवीयता नष्ट हो जाती । कोलंबस ने एक अलग विश्व की परिकल्पना को साकार करने का लक्ष्य निर्धारित किया और वह उसने खोज भी निकाला । बुद्ध ने शांति और सौंदर्य का मार्ग प्रशस्त किया । इसी प्रकार शतप्रतिशत परीक्षा परिणाम का लक्ष्य हदय में धारण करें ओर उसकी खूबसूरती को अपने मस्तिष्क में स्थापित करें। वह सौन्दर्य जो आपके पवित्रतम विचारों से आता है और उससे जो प्रसन्नतादायी परिस्थितियां निर्मित होंगी (बशर्ते आप पूर्णतः ईमानदार रहें) वह अंत में सफलता का संसार निर्मित करेगी।

03. उद्धेश्य प्राप्त करने की कामना करिए। क्या मानव की आकांक्षाए उसे पूर्ण संतोष देने का साधन बन सकती हैं और उसके शुद्ध भाव स्वयं के अस्तित्व को बचाये न रख पाने की स्थिति उत्पन्न कर सकते हैं? यह कोई नियम नहीं है इस प्रकार की स्थितियों से कुछ भी प्राप्त नहीं किया जा सकता है। स्वयं से पूछिए और परिणाम प्राप्त कीजिए।

04. उँचे स्वप्न देखिए और जैसे स्वप्न आप देखते हैं, वैसे ही बन जाते हैं । आप एक दिन क्या होगें, स्वयं से किया गया यह वादा ही आपका जीवन दर्शन है । आपके आदर्श ही भविष्यवाणी है कि आप अंततः किस यथार्थ को अनावृत करेगें। आपको पता होगा कि सबसे उत्कृष्ट उपलब्धि किसी समय एक स्वप्न ही थी। बांज, बांजफल में होता है, पक्षी अण्डे में प्रतीक्षा करता है और आत्मा की सर्वोत्तम अंतदृष्टि जाग्रत देवदूत में सांस लेती है। स्वप्न ही वास्तविकता का बीज है।

05. आपकी परिस्थितियॉ प्रतिकूल हो सकती हैं (जैसे शिक्षकों/क्षमता में कमी) परन्तु ये कमी बहुत ज्यादा दिनों तक नहीं रहेगी यदि आप 100% परीक्षा परिणाम प्राप्त करने का आदर्श निर्धारित कर लें ओर उसे प्राप्त करने के संधर्ष में लग जाएं। ऐसा संभव नहीं कि आप उसी के अंदर धूमते रहें और उसको बिना प्राप्त किए स्थिर हो जाएं।

आप अपने लक्ष्य को हृदय से महसूस करेगें और जो आपको सबसे ज्यादा प्रिय होगा उसी तरफ आप हमेशा स्वयं को आकर्षित महसूस करेगें। आपके विद्यार्थियों का परिणाम आपके हाथ में है। आपके प्रयासों के आधार पर ही आप परीक्षाफल अर्जित करेगें। न ज्यादा न कम। आपका वर्तमान वातावरण जैसा भी हो आप गिर सकते हैं, आज जहॉ हैं वही रह सकते हैं या फिर अपने विचारों, प्रयासों, उच्च दृष्टि और आदर्श से उच्चतर स्थान भी प्राप्त कर सकते हैं। आप अपने परिणामों के अनुपात में ही बड़े अथवा छोटे होगें।

उपर्युक्त पृष्ठभूमि में मैं आशा करता हूँ कि आपका विद्यालय एक ऐसी ही अंतर्दृष्टि को प्राप्त करेगा । एक नेता के रूप में आपके नेतृत्व को स्वीकार करने के प्रति प्रेरित होगा। मैं इस वर्ष शतप्रतिशत गुणवत्तापूर्ण परीक्षा परिणाम प्राप्त करने की आपकी प्रतिबद्धता का सम्मान करता हूँ।

यह पत्र उपायुक्त महोदय के अर्द्धशासकीय पत्र दिनांक 19.10.2015 के हिन्दी अनुवाद का प्रयास है।

डा.(श्रीमती) बी.कौर
सहायक आयुक्त

प्राचार्य
समस्त केन्द्रीय विद्यालय
भोपाल संभाग/आगरा संभाग